Educational Psychology

B.A. (Hons) Part-III
Paper - VI group (B)
By- Dr. Ramendra Kumar Singh
H.O.D
Deptt of Psychology
D.K. College, Dumraon (Buxar)
VKSU, Ara

प्रश्न :- व्यक्ति इतिहास विधि से आप क्या समझते हैं? शिक्षा मनोविज्ञान की अध्ययन की विधि के रूप में इसके गुण एवं सीमाओं का विवेचन कीजिए। (Case study method in Educational Psychology)

बालकों की समस्याओं का अध्ययन करने के लिये शिक्षा मनोविज्ञान के अन्तर्गत कई तरह की विधियों का इस्तेमाल किया जाता है, इनमे Case history method को विशिष्ट स्थान प्राप्त है। इस विधि द्वारा बालकों की शैक्षणिक समस्याओं से सम्बन्धित शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं का लेखाजोखा तैयार किया जाता है। इसके लिये अध्ययनकर्ता बच्चों की पारिवारिक स्थिति, वंशपरंपरा, माता-पिता एवं शैक्षणिक माहौल से सम्बद्ध अन्य तरह की तथ्यों का भी संग्रहण करता है। इसके माध्यम से अध्ययनकर्ता बच्चे की वंशपरम्परा एवं शारीरिक मानसिक गतिविधियों में निहित सम्बन्ध के विषय में पता लगाना चाहता है। इस विधि से बच्चे की सामान्य एवं असामान्य दोनों तरह के बच्चों की योग्यताओं का आकलन आसानी से कर लिया जाता है। बच्चे के विषय में सम्पूर्ण सूचनाएँ एकत्रित कर ली जाती है। बालक की अभिरुचि, जिज्ञासा, मनोवृत्ति, अभिवृत्ति, बुद्धि, मेधा, पीछड़ेपन, विकृतियों आदि से सम्बन्धित तमाम सूचनाएँ एकत्र कर ली जाती है। इस प्रकार बच्चों के पारिवारिक, सामाजिक एवं अभियोजन सम्बन्धित समस्याओं का समाधान किया जाता है। इसी संदर्भ में ब्रूक्स ने इस विधि को बच्चों की शैक्षणिक समस्याओं एवं अन्य समस्याओं की जानकारी के लिए उपयोगी माना है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि यह विधि न केवल प्रतिभाशाली बालको की अभियोजन एवं शैक्षणिक समस्याओं का अध्ययन एवं

एवं समाधान में कारगर है, बल्कि समस्याग्रस्त बालकों एवं शैक्षणिक रूप से पीछड़े बालकों का अध्ययन कर उचित शिक्षा की व्यवस्था के लिए भी राह आसान कर देती है।
इस विधि के महत्व को रेखांकित करते हुए पी० वी० यंग ने परिभाषित करते हुए कहा है।

"Case history method aims to study the entire life cycle or definite process in this cycle of an indivi-dual unit, a person, family, institution and social group or Community."

अर्थात व्यक्ति अध्ययन विधि का उद्देश्य सम्पूर्ण जीवन-चक्र अथवा एक व्यक्तिगत इकाई, एक व्यक्ति, परिवार, संस्था सामाजिक समूह या समुदाय के इस निश्चित प्रक्रियाओं का अध्ययन करना है।"

यह एक ऐसी विधि है जिसमें एक बार में एक ही बच्चे का अध्ययन किया जाता है और उसकी शारीरिक एवं मानसिक गतिविधियों से सम्बन्धित सूचनाएँ जुटाई जाती हैं। इसके अलावे उस बच्चे की life cycle के बारे में माता पिता, अभिभावक, भाई-बहन स्कूल, क्लब एवं अन्य सामाजिक समूहों से भी पूछताछ करके सूचनाएँ जुटा ली जाती हैं। उसके बाद कई दूसरों से तुलनात्मक अध्ययन करके उसकी वैयक्तिक भिन्नताएँ एवं विसंगतियों के बारे में कारणों की छानबीन की जाती है।

प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण किया जाता है और उसके आधार पर निष्कर्ष निकाला जाता है। इसको Reliable एवं Valid बनाने का भरपूर प्रयास किया जाता है। Lonffi तथा Rechards ने इस विधि द्वारा बच्चों के व्यवहारों के अध्ययन में भूत एवं वर्तमान के महत्व को महत्वपूर्ण माना है।

व्यक्ति अध्ययन विधि के गुण मनोवैज्ञानिकों ने इस विधि को शैक्षिक क्षेत्र में बच्चों के व्यवहारों के अध्ययन के लिए काफी प्रभावपूर्ण माना है। इसके निम्नलिखित गुण हैं।—

(1) बालकों की शैक्षणिक क्षमताओं का सफल अध्ययन। Case history Method से बालकों की शैक्षणिक क्षमताओं का सफलतापूर्वक अध्ययन करना संभव है। इस विधि से सामान्य बच्चों की शैक्षणिक क्षमताओं के अलावे Gifted children, Backward children Problem children आदि का अध्ययन कर उनकी उचित शिक्षा की व्यवस्था करना संभव है। इस लिहाज से यह सफल एवं कारगर विधि है।

(2.) व्यक्तिगत सूचना के लिए सर्वाधिक उपयुक्त ! - इस विधि द्वारा बालकों की व्यक्तिगत सूचनाएँ बड़ा ही सरलता से एकत्रित कर लिया जाता है जिसके आधार पर भिन्नता को समझना आसान हो जाता है। इस तरह शिक्षा सम्बन्धित व्यक्तिगत गुणों की जानकारी में यह सफल एवं कारगर है।

(3.) गहन एवं व्यापक विधि ! - इस विधि से बालकों के विषय में विस्तृत अध्ययन की जा सकती है। सूचनाओं में depth होता है, क्योंकि कई स्रोतों से सूचनाएँ एकत्र की जाती है।

(4) शीलगुणों का अध्ययन ! → यह विधि व्यक्तिगत शीलगुणों को पहचानने में सफल है। इससे प्राप्त निष्कर्षों को प्रधान शीलगुणों एवं गौण शीलगुणों का निर्धारण संभव है।

(5.) नैदानिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण ! - इस विधि को clinical value प्राप्त है, क्योंकि प्राप्त सूचनाओं से समस्या के कारणों तक पहुँचा जा सकता है और इलाज किया जा सकता है।

(6) वैध परिकल्पनाओं की रचना में सहायक ! - इस विधि से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर भविष्य में विशिष्ट एवं वैज्ञानिक अध्ययन की जा सकती है। इससे अनेक परिकल्पनाओं का निर्माण किया जा सकता है।

(7) बालकों की स्वभाव की व्याख्या में सहायक ! - यह विधि विविध प्रकार की ~~व्यक्ति~~ विकृतियों [illegible] प्रतिभाशाली बालकों के अध्ययन में सहायक है जिससे बालकों के विकासात्मक अध्ययन के आधार पर उनकी स्वभाव की व्याख्या सफलता पूर्वक किया जा सकता है।

(8.) वस्तुनिष्ठ एवं वैध विधि ! - यह एक objective & valid विधि है, क्योंकि आँकड़े कई स्रोतों जैसे परिवार, माता पिता, शिक्षक स्कूल, संस्था आदि से एकत्र किया जाता है। विभिन्न स्तर पर अन्य बालकों एवं सूचनाओं से तुलनात्मक अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला जाता है। इसलिए इसकी objectivity एवं validity बढ़ जाती है।

(9) प्रत्यक्ष विधि - यह एक direct विधि है क्योंकि इसमें

बालकों से सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं। अन्य व्यक्तियों से भी सीधे प्रश्न पूछना संभव है।

(10) बालकों के अतीत का सजीव चित्रण !- यह विधि बालकों का अध्ययन उसके अतीत के परिप्रेक्ष्य में ही करती है। अतः इसमें अध्ययन करने वाले व्यक्ति कोई तर्क संगत निष्कर्ष पर पहुँचने के पूर्व अतीत का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता पड़ता है। बालकों की समस्याओं के जड़ तक पहुँचने के लिए उसके निष्कर्षों को ज्ञात किया जाता है। अपराधी बच्चों के समस्याओं तक पहुँचा जा सकता है।

व्यक्ति अध्ययन विधि की सीमाएँ

1.) सांख्यिकीय निरूपण संभव नहीं !- इस विधि की एक प्रमुख सीमा यह है कि इस विधि का उपयोग से बालकों की केवल गुणात्मक (Qualitative) सामग्री प्राप्त होती है। इसके द्वारा मात्रात्मक (Quantitative) सामग्री नहीं प्राप्त हो पाती है। इन हालातों में इस विधि का सांख्यिकीय (Statistical) निरूपण कैसे संभव हो सकता है!

2.) माता-पिता द्वारा सही सूचना का छिपाना !- इस विधि की दूसरी बड़ी सीमा यह है कि माँ-बाप अपने बच्चों की मानसिक या शारीरिक क्षमताओं की गलत बयानी करते हैं जिससे सही सूचना नहीं मिल पाती है। इसी कड़ी में एक अन्य बात भी उभर कर सामने आती है कि Past की बातों की सही-सही जानकारी कमजोर याददास्त वाले माँ बाप नहीं दे पाते हैं। अतीत की घटनाओं को प्रायः भूल जाते हैं। इन हालातों में इस विधि की विश्वसनीयता पर सवाल उठना लाजीम है। गड़बड़ आँकड़े मिलने की संभावनाएँ बनी रहती हैं।

3.) समय, श्रम एवं साधन का दुरुपयोग !- इस विधि की एक बड़ी सीमा यह भी है कि इसमें बालकों की समस्याओं (शैक्षणिक आदि) का अध्ययन एक बार में केवल एक ही बालक का किया जा सकता है। ऐसी हालत में इसमें समय एवं श्रम की बर्बादी होती है।

(4.) अध्ययनकर्ता का व्यक्तिगत प्रभाव का दोष !- इस विधि में अध्ययनकर्ता अपनी व्यक्तिगत शीलगुणों से प्रभावित होकर कई बार बालक की संगत व्यवहारों को छोड़ देता और असंगत सूचनाएँ जोड़

व्यक्ति छापों का प्रभाव इसकी विश्वसनीयता को प्रभावित करते लगता है।

(5) दोषपूर्ण अभिलेख !- इस विधि से प्राप्त अभिलेख स्मृति पर आधारित होता है। इसमें शोधकर्ता की स्मृतिदोष, व्यक्तिगत पक्षपात एवं पूर्वाग्रहों का प्रभाव पड़ने की संभावना है। इससे प्राप्त अभिलेख दोषपूर्ण होता है

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा मनोविज्ञान के अन्तर्गत बालकों की समस्याओं की अध्ययन के लिए Case history method एक महत्वपूर्ण विधि है। इसके माध्यम से हम न केवल प्रतिभाशाली बालकों की समायोजन एवं शिक्षा सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन कर सकते हैं बल्कि शैक्षणिक रूप से पीछे एवं समस्याग्रस्त बालकों का अध्ययन भी कर सकते हैं। यानी - सामान्य एवं असामान्य दोनों तरह के बालकों की समस्याओं का अध्ययन कर उचित शिक्षा की व्यवस्था किया जा सकता है जो राष्ट्र की विकास के लिए आवश्यक है। इस विधि की अपनी कुछ विशेषताएँ एवं उपादेयताएँ हैं तथापि यह पूर्णरूपेण दोष-रहित नहीं है, बल्कि इसे एक सीमा तक ही कारगर विधि माना जाना उचित प्रतीत होता है।

R.K. Singh
20/07/2020
D.K. College, Dumraon
Buxar